वैदिककाल के आर्यों के राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन पर प्रकाश डालिए

वैदिक काल की सभ्यता भारत में आर्यों की प्राचीन सभ्यता थी

वैदिककाल आर्यों के इतिहास के उस युग को कहते हैं जब वेदों की रचना की वैदिक कालीन सभ्यता के ज्ञान का मुख्य आधार वैदिक साहित्य है जिसमें वैदिक ग्रंथ पुराणों अनुश्रुतियों का प्रमुख स्थान है पुराणों के अनुसार यह काल त्रेता के लगभग दो हजार वर्ष पूर्व माना जाता है वैदिक काल दो भागों में विभक्त किया जाता है ऋग्वेदकाल और उत्तरवैदिककाल ऋग्वेद सबसे प्राचीन है इसके बाद ही अन्य वैदिक ग्रंथों का जन्म हुआ अब हम ऋग्वैदिक सभ्यता के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करेंगे ?

ऋग्वैदिक राजनीतिक व्यवस्था ——

ग्रामसंगठन → ऋग्वैदिक काल की राजनीतिक व्यवस्था का मुख्य आधार कुटुम्ब था जो पैतृक होता था कुटुम्ब का प्रधान पिता अथवा कोई बड़ा-बूढ़ा होता था जो कुटुम्ब के अन्य सदस्यों पर नियंत्रण रखते थे वह कुलपति कहलाता था कई कुटुम्बों को मिलाकर एक ग्राम बनता था ग्राम के सभी कुलपति मिलकर एक प्रधान को चुनते थे वही ग्राम का प्रधान ग्रामीणि कहलाता था ग्राम की रक्षा का भार उसी पर रहता था। ग्राम पंचायतों की सहायता से ग्राम के सभी कार्य (मेला, सड़क, तालाब छोटे-छोटे झगड़ों का निर्णय) कई ग्रामों को मिलाकर एक विश बनता था कई विशों को

7 Thursday

मिलाकर "जन" बनता था जन का रक्षक गोप कहलाता था जो प्रायः राजा स्वयं हुआ करता था

राजा → ऋग्वेद में अनेक राजाओं का उल्लेख मिलता है इससे यह निष्कर्ष निकला है कि राज्य का राजनीतिक संगठन राजतंत्रात्मक था राज्य का प्रधान राजा कहलाता था राजा का पद आनुवंशिक था राजा के मरने के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र राजमहल में रहता गद्दी पर बैठता था वह राजमहल में रहता था अनेक पदाधिकारी हुआ करते थे राजा की प्रत्येक आज्ञा का पालन जनता के लिए अनिवार्य था

राजा का कर्तव्य → प्रजा की रक्षा, शत्रुओं से

8 Friday

युद्ध, राज्य में शान्ति रखना शान्तिकाल में यज्ञ आदि कार्यों का अनुष्ठान राजा का प्रमुख कर्तव्य था राजा अपनी प्रजा के आचरण पर दृष्टि रखता था इसके लिए गुप्तचर नियुक्त था जो राजा को गुप्त आधार पर सूचना देता था आचरण भ्रष्ट लोगों को सजा दिया जाता था

पदाधिकारी → राजा की सहायता के लिए बहुत से पदाधिकारी थे जिनमें पुरोहित, ग्रामणी, सेनानी प्रधान था पुरोहित का स्थान सबसे ऊंचा था उसका पद प्रायः

सम्मेलन का राष्ट्रीय सभा होती थी।

सभा वर्तमान समय काल इंगलैण्ड का लार्ड सभा (House of Lord) अथवा अमेरिका के सीनेट (Senate) के समान थी लेकिन इसमें स्त्रियों को भाग लेने का अधिकार नहीं था।

वैदिक सामाजिक व्यवस्था → आर्यों का सामाजिक व्यवस्था संगठित थी सामाजिक जीवन सरल और साधारण था जो लोग गोरे थे वे आर्य और जो काला थे वे अनार्य थे। आर्य अपने कर्मों अनुसार कई वर्गों में विभक्त थे, पढ़ने तथा यज्ञ करने वाले — ब्राह्मण

युद्ध तथा शासन करने वाले — क्षत्रिय

कृषि तथा व्यापार करने वाले — वैश्य

सेवा के कार्य करने वाले — शूद्र कहलाते थे

आश्रम व्यवस्था → उत्तरवैदिक काल के आश्रम व्यवस्था थी जिसमें जीवन के चार भाग किये गये थे - ब्रह्मचर्य गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा सन्यास।

इनका पालन तीन वर्गों को करना पड़ता था ब्राह्मणों, क्षत्रिय, वैश्य को।

परिवार → समाज में परिवार सबसे छोटी इकाई थी पितृप्रधान परिवार था। संयुक्त परिवार की प्रधानता थी। इस प्रकार परिवार में पिता का स्थान सर्वोपरि था

स्त्रियों का स्थान → इस काल में पत्नि का महत्व था वह गृहिणी कहलाती थी घर के

अन्दर सामने कार्य उन्हीं को करना पड़ता था। स्त्री धार्मिक कार्यों में पति के साथ रहती थी।

विवाह प्रथा → विवाह को धार्मिक संस्कार मानते थे। निकट के सम्बन्धी आपस में विवाह करते थे। दहेज प्रथा नहीं थी। ब्राह्म विवाह का सबसे अधिक प्रचलन था।

वस्त्र आभूषण → आर्य लोग सुन्दर वस्त्र तथा आभूषण पहनते थे। सूती, ऊनी और रेशमी वस्त्र पहनते थे। स्त्रियां, हार, कंगन, कुण्डल, कण्ठे पहनती थी।

शिक्षा → इस काल में शिक्षा मौखिक होती थी। शिक्षा का उद्देश्य, बुद्धि और आत्म शुद्धि के लिए था।

भोजन → आर्यों का मुख्य भोजन गेहूँ, जौ, चावल, दूध था। तरह-तरह के सब्जियाँ भी खाते थे। कुछ लोग माँसाहारी भी थे। कुछ पेय पदार्थों का प्रयोग करते थे लेकिन ब्राह्मण इसे घृणा करते थे।

नृत्य और संगीत के भी प्रेमी थे। इस काल में मृतक क्रिया दो प्रकार से या तो जलाते थे या जमीन में गाड़ने की प्रथा थी।

ऋग्वैदिक आर्थिक व्यवस्था → इस समय व्यापारियों को पणि कहा जाता था। व्यापार जल और स्थल दोनों मार्ग से होता था। प्रारम्भ में वस्तु विनिमय आगे में सोना चाँदी का व्यवहार होने लगा। ब्याज देने की प्रथा प्रचलित थी।

सेनानी होता था पुरोहित राजा के धर्मगुरु और
परामर्शदाता होता था इसे राजा के साथ रणक्षेत्र में
जाना पड़ता था राजा की कुमारी प्रमुख पदाधिकारी
सेनानी था वह सेना का संचालन करता था उसकी
नियुक्ति राजा स्वयं करता था जब युद्धों के समय
आवश्यकता नहीं होती थी उसके सेनानी ही सेना का प्रमुख
ग्राम का शासन व्यवस्था की जिम्मेदारी ग्रामणी पर होता था

न्याय व्यवस्था → राजा अपनी सहायकों की मदद
से न्याय व्यवस्था करता था न्याय कार्य में पुरोहित
से बड़ी सहायता मिलती थी जिन अपराधों का उल्लेख
ऋग्वेद में मिलता है उसके चोरी, डकैती, सेंध लगाना
रात में पशुओं की चोरी खूब होती थी अपराधियों
को दण्ड की व्यवस्था थी।

युद्ध → युद्ध में सभी लोगों को भाग लेना पड़ता
था। साधारण लोग पैदल युद्ध करते थे लेकिन राजा
और क्षत्रिय लोग ~~रथों~~ रथों से युद्ध करते थे युद्ध
में आत्मरक्षा के लिए कवच, आक्रमण करने का प्रधान
शस्त्र धनुष-बाण भाला फरसा तलवार, का प्रयोग
किया जाता था युद्ध प्रायः नदियों के तट पर हुआ करते

सभा और समिति → राजा अपने जन का सबसे शक्तिशाली
व्यक्ति होता था परन्तु वह निरंकुश नहीं होता था प्रजा
की इच्छाओं भावनाओं का सदैव आदर करता था सभा
~~सामान्य व्यक्तियों का प्रतिनिधि होती थी तथा समिति~~

15 Friday

कला → आर्यों को विभिन्न कलाओं में रुचि थी। वे मृद्भाण्ड कला, कताई, बुनाई धातु कला काष्ठकला में निपुण थे।

धार्मिक अवस्था → उनका धर्म बहुत सरल और सादा था। वे प्रकृति की पूजा करते थे। विश्वास था कि सूर्य, चन्द्र, वायु, मेघ आदि में ईश्वर निवास करते है इसी कारण इनकी उपासना करते थे। पितरों के पूजा में विश्वास रखते थे। अग्नि में अन्न, दूध, घी आदि देवताओं को चढ़ाते थे। आर्यों में पुनर्जन्म की कल्पना नहीं होती थी उनका विश्वास था कि मृत्यु के उपरान्त जीवन का अन्त नहीं होता है।

16 Saturday